

SHRI IBRAHIM. NABISAHEB. SUTAR

Shri Ibrahim. Nabisaheb. Sutar founded "Bhavaikya Janapada Sangeeta Meta" (An association of the folk people for promotion of emotional integration". Shri Sutar, who is fondly known as Kabir of Kannada, has named his home "Bhavaikya" (Harmony). For the last five decades he has been inspiring people all over the state by offering literary talks, lectures, bhajans and social service by using the literary works of saintly writers to spread their humanitarian and spiritual messages across the state. He has been offering hundreds of lectures every year for promotion of communal harmony between Hindu and Muslim.

2. Born on May 10, 1940 in Mahalingpur town in Bagalkot District of Karnataka state to Nabisab and Ameenabi, Shri Sutar is basically a weaver. His formal education was in Urdu and upto third standard. The family was very poor. He founded "Ramjan Awareness Association" in 1960 along with his childhood friends. It was a very significant step in his days of youth.

3. Shri Sutar has enriched the world of literature by writing "Paramartha Lahari", "Tatvajnanakke Sarvaroo Adhikarigalu" and "Navella Bharateeyaru". His poem "Navella Bharateeyaremba Bhava Moodali" has become a very famous and popular prayer song of emotional integration. His six companions join him in offering individual Pravachanas (simple moralistic and spiritual speech) and offer panel discussion programmes. He is the Innovator of art forms called "Bhavaikya Rasamanjari","Adhyatma Samvada Tarangini" and "Geeta Samvada Tarangini". Many CDs of his programmes have been released. He has offered messages of emotional integration in many of the public festivals of Karnataka. He has presented lectures for emotional integration and bhajans during the Historic Basava Shanti Jyoti Padayatra" held between 1986 and 1996 which contributed to the success of the peace march.

4. Shri Sutar travels across the state in the holy month of Shravana as per the Hindu Calendar in order to deliver lectures. This has been a regular feature of life for the last many decades. His passion is to render the much needed social service when he visits a village for delivering lectures. The fact of the matter can be understood in his selfless, dedicated and (detached) social service as Construction of 9 km. road between Shegunsi to Terdal in 1988, Formation of "Swami Vivekananda Primary School at Dhavaleshwar village in 2004, Construction of a Kalmeshwar Marriage Hall at Sonna village in 2010, Construction of a tourist home called "Shri Basaveshwar Yatri Nivas" at Aralimatti village in 2012. His other activities involves active role in eradication of Devadasi system (a tradition of temple related prostitution) in 1992,1993,1994 and 1998, Member of Karnataka Sangeeta Nrutya Academy from 1998 to 2001, Organized monthly camps for the study of the philosophy under the guidance of His Holiness Sahajananda Swamiji of Mahalingpur and he has also offered his services in teaching He has actively participated by associating with Shri S S Ganapatrao Maharaj in the padayataras for building a liquor.

5. Government of Karnataka conferred "Rajyotsava Award" in recognition of Shri Sutar's active role and services to the state through his lectures for promotion of spiritual knowledge in 1995. He is a recipient of the "Karnatak Kalashree" award from the Government of karnatak for katha-keertanas in 2009-10. "Alvas Nudi Siri Award" was conferred on him in 2006 as recognition of his services unique contribution to emotional integration. Several other awards and titles conferred on him include "Kannada Kabeera", "Sufisanta" (Sufisaint), Sharana Santa Tatvapraveena", "Abhinava Shareefa", "Basavatatava Pracharaka", "Basavatatvashree", "Sarvadharma Samanvayee", "Bhavaikya Nidhi", "Sahitya Shree", "Gadinadu Chetana", "Shreenatha", "Sujayashree" "Sarvabhauma Sammana", "Sarvadhari Sammana", Allahabad Maulana Award, Outstanding Person for National Integration and "Kayakayogi" in addition to "Asamanya Kannadiga-2016 award conferred by Kannada Prabha and Suvrna News Channel. He has successfully nurtured the sapling of emotional integration and has enabled it to become a gigantic tree by offering all his care and pride. In recognition of his great and unique services his admirers came together to felicitate him on the occasion of his 75th Birth Day in 2016 by organizing "Bhavaikya Shanti Sammelana" at Mahalingpur and have brought out a book titled "Bhavaikya Darshana" which has been dedicated to him.

6. The press representatives have introduced Shri Sutar to the society in their articles under the Headings "Sauharda Setuve", "Bhavaikya Hadina Modigara", "Ella Dharamagala Kondi" "Bhavaikya Kavi", "Dharma Samanvaya Harikara", "Adhyamika Kshetrada Harikara" "Bhavaikya Setu", "Nadina Aparoopada Pravachana Kalavida", "Kannadakobba Kabeera", "Sarvadharma Pravachaka", "Matandhara Madye Avanobba Santa", "Bhavaikyada Ghatti Dhvani" "Sufi santar hadiyalli Ibrahim" and more such other titles. He hopes to establish an all — faith study center in his town, which will be an Ashram for studies in all religions and faiths. He will train a team of youngsters to carry the message to future generations. The goal of his life has been to promote emotional integration and love of the universe.



श्री इब्राहीम. नबीसाहेब. सुतार

श्री इब्राहिम. नबीसाहेब. सुतार ने ''भावैक्य जनपद संगीत मीत'' (भावनात्मक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए जनपदीय लोगों का एक संगठन) की स्थापना की। कन्नड़ भाषा के कबीर के नाम से विख्यात श्री सुतार ने अपने घर का नामकरण ''भावैक्य'' (सौहार्द) किया। विगत पांच दशकों से आप साहित्यिक वार्ताओं, व्याख्यानों, भजनों तथा समाज के संत लेखकों की साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से उनके मानवतावादी एवं आध्यात्मिक संदेश लोगों तक पहुंचाकर संपूर्ण राज्य के लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। आप हिंदू तथा मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष असंख्य व्याख्यान देते हैं।

2. आपका जन्म 10 मई, 1940 को कर्नाटक राज्य के बगलकोट जिले के महालिंगपुर में नबीसाब एवं आमीनाबी के घर हुआ। श्री सुतार मूल रूप से एक बुनकर हैं। तीसरी कक्षा तक आपने अपनी औपचारिक शिक्षा उर्दू में प्राप्त की। आपका परिवार अत्यंत गरीब था। आपने अपने बचपन के साथियों के साथ मिलकर 1960 में ''रमजान जागरूकता संगठन'' की स्थापना की। आपके युवा जीवन की यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

3. आपने ''परमार्थ लहरी'' ''तत्वजनानाके सर्वारु अधिकारीगालू'' तथा ''नेवला भारतीयारु'' की रचना करके साहित्य जगत में अप्रतिम योगदान दिया है। आपकी रचित कविता ''नवेला भारतीयारेस्वा भाव मूदाली'' भावनात्मक एकता का एक सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय प्रार्थना गीत बन चुका है। आपके छ: सहयोगी एकल प्रवचन देने (साधारण नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रवचन) तथा पैनल चर्चा कार्यक्रमों के संचालन में आपका सहयोग करते हैं। आपको ''भावैक्य रसमंजरी'' ''आध्यात्म संवाद तरंगिणी'' तथा ''गीता संवाद तरंगिणी'' नामक कला के नए रूपों का आविष्कार करने का श्रेय प्राप्त है। आपके कार्यक्रमों की सी. डी. जारी की गई है। आपने कर्नाटक के अनेक लोक उत्सवों में भावनात्मक एकता के संदेश दिए हैं। आपने 1986 तथा 1996 के दौरान आयोजित ऐतिहासिक विश्व शांति ज्योति पदयात्रा के दौरान भावनात्मक एकता संबंधी व्याख्यान दिए और भजन प्रस्तुत किए जिसने शांति मार्च की सफलता में अहम भूमिका निभाई।

4. आप हिंदू कैलेंडर के अनुसार श्रावण के पवित्र महीने में उपदेश देने के लिए पूरे राज्य का दौरा करते हैं। पिछले कई दशकों से यह आपके जीवन की एक खास विशेषता बन गई है। जब आप व्याख्यान देने जाते हैं तो वहां के लोगों के लिए आवश्यक समाज सेवा करना आपकी आदत बन गयी है। मानवता की सेवा के प्रति आपकी निष्ठा नि:स्वार्थ, समर्पित समाज सेवा के रूप में परिलक्षित होती है जिसके परिणमस्वरूप वर्ष 1988 से सेंगुसी से तेरडाल के बीच 9 किमी. लंबी सड़क, वर्ष 2004 में ध्वलेश्वर गांव में ''स्वामी विवेकानंद प्राथमिक विद्यालय'', वर्ष 2010 में सोन्ना ग्राम में कमलेश्वर मैरिज हॉल, वर्ष 2012 में अरालीमाटी ग्राम में ''श्री बासवेश्वर यात्री निवास'' नामक पर्यटक ग्रह का निर्माण हुआ। आपने वर्ष 1992, 1993, 1994, 1998 में देवदासी प्रथा (मंदिरों से जुड़ी वेश्यावृत्ति) के उन्मूलन में अहम भूमिका अदा की तथा आप वर्ष 1998 से 2001 के दौरान कर्नाटक संगीत नृत्य अकादमी के सदस्य रहे। इसके अलावा आपने महालिंगपुर के परमपूज्यनीय सहजानंद स्वामी जी के दिव्य मार्गदर्शन में दर्शनशास्त्र के अध्ययन के लिए मासिक शिविरों का आयोजन किया तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनी विशिष्ट सेवा प्रदान की। एक पेय पदार्थ के निर्माण के लिए आपने श्री एस एस गणपतराव महाराज के साथ पदयात्राओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

5. आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए अपने व्याख्यानों के माध्यम से राज्य की सेवा में अहम भूमिका निभाने सम्मान स्वरूप कर्नाटक सरकार की ओर से आपको 1995 में ''राज्योत्सव अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। कथा-कीर्तनों के लिए कर्नाटक सरकार की ओर से आपको वर्ष 2009-10 में ''कर्नाटक कलाश्री'' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। भावनात्मक एकता को बढ़ावा देने के लिए आपके द्वारा की गई अविस्मरणीय सेवा की मान्यतास्वरूप आपको 2006 में ''अल्वास नूदी श्री अवार्ड'' से विभूषित किया गया। आपको प्रदान किए गए अन्य पुरस्कारों तथा उपाधियों में ''कन्नड़ कबीरा'', ''सूफीसंत'', शरण संत तत्वप्रवीण'', ''अभिनव शरीफा'', ''वास्वतत्व प्रचारक'', ''वास्वतत्वश्री'', ''सर्वधर्म समन्वयी'', ''भावैक्य निधि'', ''साहित्य श्री'', ''गादीनादू चेतन'', ''श्रीनाथ'', ''सुजयश्री'', ''सर्वभौम सम्मान'', ''सर्वधारी सम्मान'', अलाहाबाद मौलाना अवार्ड, आउटस्टैंडिंग पर्सन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन तथा कन्नड़ प्रभा एवं स्वर्ण न्यूज चैनल द्वारा प्रदत्त ''असामान्य कन्नादिशा'2016 अवार्ड'' के अलावा ''कर्मयोगी'' अवार्ड भी शामिल हैं। आपने बड़े यत्न से भावनात्मक एकता के पौधे को सींचा है तथा अपनी सेवा सुश्रुषा से इसे एक विशाल वृक्ष बनाने में अपना अप्रतिम सहयोग प्रदान किया है। आपकी महान एवं विशिष्ट सेवाओं की मान्यतास्वरूप आपके प्रशंसकों ने वर्ष 2016 में आपके 75वें जन्म दिवस के अवसर पर आपको सम्मानित करने के लिए महालिंगपुर में ''भावैक्य शांति सम्मेलन'' का आयोजन किया तथा ''भावैक्य दर्शन'' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की जो आपको समर्पित है।

6. प्रेस प्रतिनिधियों ने अपने लेखों में श्री सुतार की ''सौहार्द सेतु'' ''भावैक्य हादिना मोदिगरा'', ''एल धर्माग्ला कोंडी'', ''भावैक्य कवि'', ''धर्म समन्वय हरिकारा'', ''आध्यात्मिक क्षेत्र हरिकारा'', ''भावैक्य सेतु'', ''नादिना अपरुपदा प्रवचन कलाविद'', ''कन्नडकोबा कबीरा'', ''सर्वधर्म प्रवाचक'', ''मातंधारा मदये अवानोबा संत'', ''भावैक्यदा घाटी ध्वनि'', 'सूफी संता हादियाली इब्राहिम'' तथा ऐसी ही अनेक उपाधियों से संबोधित करते हुए समाज से परिचय करवाया। आपकी अपने शहर में एक ऐसे सर्व धर्म अध्ययन केन्द्र की स्थापना करने की इच्छा है जहां सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर सकें। आप भावी पीढ़ियों तक भावनात्मक एकता का संदेश पहुंचाने के लिए युवाओं के एक दल को प्रशिक्षित करना चाहते हैं। भावनात्मक एकता तथा वैश्विक प्रेम को बढ़ावा देना ही आपके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है।